14 जुलाई, 2024

पिन्तेकुस्त के बाद आठवाँ रविवार

विषय: मुसीबत के समय में परमेश्वर हमें सहारा देता है।

भजन संहिता अध्याय 42 **वचन** 1 **से लेकर** 5 **तक**

2 **राजा अध्याय** 18 वचन 28 से लेकर 35 और 2 **राजा अध्याय** 19 **वचन** 1 **से लेकर** 7 तक

प्रेरितों के काम अध्याय 4 **वचन** 23 **से लेकर** 31 तक

मरकुस 4 **वचन अध्याय** 35 **से लेकर** 41 तक

सुप्रभात, प्रिय कलीसिया। आज, हम एक ऐसे विषय पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए हैं, जो हम सभी के साथ गहराई के साथ जुड़ा हुआ है: "मुसीबत के समय में परमेश्वर हमें सहारा देता है।" जीवन में अक्सर हमें चुनौतियाँ और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, ऐसे समयों में हम अपने विश्वास से तसल्ली और सामर्थ्य की खोज करते हैं। आज के वचन हमारे जीवन में परेशानियों के कारणों के बारे में गहरी जानकारी प्रदान करते हैं, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन कठिन समयों में परमेश्वर किस तरह हमारा साथ देता है। आइए हम परमेश्वर के वचन से ज्ञान और उत्साह को प्राप्त करने के लिए अपने दिल और दिमाग को तैयार करें।

पहला विचार - मुसीबत के समय में परमेश्वर की लालसा करना: भजन संहिता अध्याय 42 **वचन** 1 **से लेकर** 5 **तक**

भजन 42 में मुसीबत की घड़ी में एक आत्मा की गहरी तड़प को व्यक्त किया गया है, जो परमेश्वर से तसल्ली चाहती है:

"जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ। जीवते ईश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा? मेरे आँसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं; और लोग दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है? यह स्मरण करके मेरा प्राण शोकित हो जाता है कि मैं कैसे भीड़ के संग जाया करता था; मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेवाली भीड़ के बीच में परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे जाया करता था। हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा।"

भजनकार का विलाप करना उसकी उथल-पुथल में डूबी हुई आत्मा की पीड़ा को दर्शाता है। ईश्वर के लिए इस तरह की लालसा करना, जिसका वर्णन इतने स्पष्ट तरीके से किया गया है, हमारे अपने

अनुभवों को दर्शाती है, विशेषकर जब हम जीवन की परीक्षाओं का सामना करते हैं। निराशा से भरे क्षणों में, हम परमेश्वर की उपस्थिति के लिए तरस उठते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक हिरण नदी की जलधाराओं के लिए तरस उठती है। भजनकार हमें परमेश्वर पर अपनी आशा को लगाए रखने के लिए उत्साहित करता है, वह हमें याद दिलाता है कि हमारी परेशानियों के बावजूद, परमेश्वर हमारा उद्धारकर्ता और हमारी सामर्थ्य का स्रोत है।

दूसरा विचार - धमकी के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े रहना: 2 **राजा अध्याय** 18 वचन 28 से लेकर 35 और 2 **राजा अध्याय** 19 **वचन** 1 **से लेकर** 7 तक

राजा हिजकिय्याह की कहानी धमकी का सामना करने और परमेश्वर से हस्तक्षेप की मांग करने का एक शक्तिशाली उदाहरण को प्रदान करती है। 2 राजा अध्याय 18 वचन 28 से लेकर 35 में, अश्शूर के राजा का दूत यरूशलेम के लोगों में भय और संदेह पैदा करने का प्रयास करता है:

"राजा यों कहता है, 'हिजकिय्याह तुम को धोखा देने न पाए, क्योंकि वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा न सकेगा। और वह तुम से यह कहकर यहोवा पर भरोसा कराने न पाए कि यहोवा निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा।"

इस धमकी के बावजूद, हिजकिय्याह मदद के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ता है। 2 राजा अध्याय 19 वचन 1 से लेकर 7 में, हम उसकी प्रतिक्रिया को देखते हैं:

"जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपने वस्त्र फाड़, टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया। उसने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर था, और शेब्ना मंत्री को और याजकों के पुरनियों को, जो सब टाट ओढ़े हुए थे, आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता के पास भेज दिया।"

हिजकिय्याह द्वारा प्रार्थना करना और भविष्यद्वक्ता यशायाह के माध्यम से परमेश्वर की खोज करने का कार्य भारी बाधाओं के बावजूद उसके विश्वास का उदाहरण है। परमेश्वर यशायाह के माध्यम से उत्तर देता है, हिजकिय्याह को आश्वासन दिया जाता है कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली है और वह यरूशलेम को बचाएगा। यह कहानी हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर हमारी शरण और सामर्थ्य है, वही मुसीबत में हमेशा साथ रहने वाला सहायक है। जब हम अपने विश्वास में दृढ़ बने रहते हैं और परमेश्वर का मार्गदर्शन चाहते हैं, तो वह हमें थामे रखता है और हमें हमारे भय से छुड़ा लेता है।

तिसरा विचार - प्रार्थना और समुदाय की सामर्थ्य: प्रेरितों के काम अध्याय 4 वचन 23 से लेकर 31 तक

नए नियम में हम पाते हैं कि आरंभिक मसीहियों को सताव और धमकियों का सामना करना पड़ा था। प्रेरितों के काम अध्याय 4 वचन 23 से लेकर 31 में इन चुनौतियों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया का वर्णन किया गया है:

"वे छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ प्रधान याजकों और पुरनियों ने उनसे कहा था, उनको सुना दिया। यह सुनकर उन्होंने एक चित्त होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से प्रार्थना की।"

विश्वासियों की तत्काल प्रतिक्रिया परमेश्वर के हस्तक्षेप की मांग करने के लिए प्रार्थना में एक साथ आने की थी। उनकी प्रार्थना विश्वास का एक सामूहिक कार्य था, जिसमें परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार किया गया और धमकियों के बावजूद अपने मिशन को जारी रखने के लिए हियाव मांगा गया था। इसके लिए परमेश्वर की प्रतिक्रिया भी सामर्थ्य से भरी थी:

"जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।"

यह वचन मुसीबत के समय प्रार्थना और सामुदायिक सहायता प्राप्ति के महत्व पर प्रकाश डालता है। जब हम कठिनाइयों का सामना करते हैं, तब प्रार्थना में एक साथ इकट्ठा होना और एक-दूसरे की सहायता करना हमारे विश्वास को मजबूत करता है और हमारे हालातों में परमेश्वर की उपस्थिति को आमंत्रित करता है। परमेश्वर हमें अपने आत्मा से भरकर, हमें दृढ़ रहने का साहस देकर और सामर्थ्य प्रदान करके हमारा सहायता करता है।

चौथा विचार - तूफ़ान में यीशु पर भरोसा रखना: मरकुस अध्याय 4 वचन 35 से लेकर 41

मरकुस के सुसमाचार में हमारे जीवन में तूफानों को शांत करने के लिए यीशु की सामर्थ्य का एक ज्वलंत चित्र प्रस्तुत किया गया है। मरकुस अध्याय 4 वचन 35 से लेकर 41 में, हम उन चेलों के बारे में पढ़ते हैं, जो एक भयंकर तूफान में फंस गए थे, जब यीशु नाव में सो रहा था:

"तब बड़ी आँधी आई, और लहरें नाव पर यहाँ तक लगीं कि वह पानी से भरी जाती थी। पर वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था। तब उन्होंने उसे जगाकर उससे कहा, “हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नष्ट हुए जाते हैं?” तब उसने उठकर आँधी को डाँटा, और पानी से कहा, “शान्त रह, थम जा!” और आँधी थम गई और बड़ा चैन हो गया; और उनसे कहा, “तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?”

यह अनुच्छेद हमें शिक्षा देता है कि जब ऐसा लगता हो कि हमारी परेशानियों में परमेश्वर चुप है या हमें नहीं सुन रहा है, तब भी वह पूरी तरह से जागरूक है और हमारे तूफानों में शांति लाने में सक्षम है। यीशु द्वारा हवा और लहरों को फटकारना प्रकृति और सभी तरह की हालातों पर उसके अधिकार को दिखाता है। यह हमें उसकी सामर्थ्य और उपस्थिति पर भरोसा करने के लिए कहता है, तब भी जब हम गड़बड़ी से घिरे हुए होते हैं। परमेश्वर तूफानों को शांत करके और हमें उसकी अटूट सहायता पर विश्वास रखने की याद दिलाकर हमारा साथ देता है।

चलिए निष्कर्ष को देखते हैं

प्रियों, जब हम इन वचनों पर मनन करते हैं, तो हम एक सामान्य सूत्र को देखते हैं: यह कि परमेश्वर हमेशा हमारे साथ है, वह मुसीबत के समय में हमारा साथ देता है। चाहे फिर यह भजनों में परमेश्वर के लिए गहरी तड़प हो, या फिर हिजकिय्याह का दृढ़ विश्वास ही क्यों न, या आरंभिक कलीसिया में प्रार्थना की सामर्थ्य हो, या फिर तूफान में यीशु की शांत उपस्थिति ही क्यों न हो, हमें याद दिलाया जाता है कि परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ता। वही हमारी शरण, हमारी सामर्थ्य और मुसीबत में हमारे साथ सदैव बनी रहने वाली सहायता है।

आइए प्रार्थना करें

हे स्वर्गीय पिता, हम आपकी बनी रहने वाली उपस्थिति और हमारे जीवन में आपकी सहायता के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। मुसीबत के समय में, हमें यह याद रखने में मदद करें कि आप ही हमारी शरण और सामर्थ्य हैं। हमारे विश्वास को मजबूत करें और हमें आपकी सामर्थ्य पर विश्वास करने के साथ हमारी चुनौतियों का सामना करने का हियाव प्रदान करें। हे प्रभु, हम उन लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं, जो आज कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। उन्हें अपने प्रेम और शांति से भरी तसल्ली से भर दें। हमें अपने पवित्र आत्मा से भर दीजिए, ताकि हम हियाव से आपकी भलाई का प्रचार कर सकें और आपके उद्धार पर भरोसा कर सकें। हे पिता, हमें याद दिलाए, कि आप हमेशा हमारे साथ हैं, आप ही तूफानों को शांत करते हैं और अपने सामर्थी हाथ से हमें संभालते हैं। हम यह प्रार्थना हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में करते हैं। आमीन।।

रविवारिये उपदेश – द रेव्ह. डॉ. डी. जे. अजित कुमार, जनरल सेक्रेटरी, सी. एन. आई, सिनड

(हिंदी अनुवाद - द रेव्ह. जितेन्द्र जीत सिंह - करनाल, हरियाणा)